

नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मध्य प्रदेश में औसत से कम बारिश और गिरते भूजल स्तर ने आगामी महीनों में जल संकट की आशंका बढ़ा दी है. जलाशयों में कम पानी का असर पेयजल आपूर्ति और विद्युत उत्पादन पर पड़ सकता है, वहीं छोटी नदियों का घटना प्रवाह किसानों की चिंता बढ़ा रहा है. रबी की प्रमुख फसल गेहूं की सिंचाई प्रभावित होने की आशंका है. यह स्थिति प्राकृतिक परिस्थितियों की चुनौती के साथ हमारी कमजोर जल प्रबंधन व्यवस्था का भी परिणाम है. इंदौर में स्थानीय शासन मंत्री की बैठक में जनवरी तक ही पेयजल उपलब्ध रहने की आशंका जताया जाना गंभीर संकेत है. यदि अभी से प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो गर्मियों में संकट विकराल हो सकता है. आजादी के इतने वर्षों बाद भी पेयजल जैसी बुनियादी जरूरत के लिए वर्षा पर निर्भरता हमारी व्यवस्थागत फिलहाल को दर्शाती है. कम बारिश को रोकना नहीं जा सकता, लेकिन उपलब्ध पानी का संरक्षण और उसका विवेकपूर्ण उपयोग तो सुनिश्चित किया ही जा सकता है.

जल संकट : ठोस और दीर्घकालिक उपाय जरूरी

प्रदेश में छोटी और सहायक नदियों का सिकुड़ना इस संकट का एक प्रमुख कारण है. अतिक्रमण, पेड़ों की कटाई, अवैध उत्खनन और प्राकृतिक जल संचयन की उपेक्षा ने नदियों की जल धारण क्षमता को प्रभावित किया है. नदी किनारे के पेड़-पौधे वर्षा जल को जमीन में पहुंचाने और भूजल स्तर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. इनके नष्ट होने से बारिश थमत ही नदियों का प्रवाह घटने लगता है. इसका असर उन बड़ी नदियों पर भी पड़ता है, जिन्हें छोटी नदियों और जलधाराओं से पानी मिलता है. इसका सीधा असर कृषि पर पड़ सकता है. प्रदेश में गेहूं के लगभग 30 प्रतिशत रकबे की सिंचाई नदियों पर निर्भर बताई जा रही है. इस फसल को सामान्यतः तीन से चार बार पानी की जरूरत होती है. नदियों में पर्याप्त जल उपलब्ध नहीं होने पर किसानों को सिंचाई के लिए परेशानी उठानी पड़ेगी. इससे उत्पादन और किसानों की आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है. इसलिए नदी संरक्षण को केवल पर्यावरण को विषय मानने के बजाय कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जोड़कर देखना होगा. दूसरी ओर, उपलब्ध पानी की बर्बादी भी चिंता का विषय है. स्थानीय निकायों और पंचायतों की लापरवाही से पेयजल आपूर्ति के दौरान बड़ी मात्रा में पानी व्यर्थ चला जाता है. पाइप लाइनों की लीकज रोकने, भूजल दोहन को नियंत्रित करने और वर्षा जल संचयन को प्रोत्साहित करने में अपेक्षित गंभीरता नहीं दिखाई देती. संकट के समय टैंकों और अन्य अस्थायी उपायों पर निर्भर रहने के बजाय ऐसी व्यवस्था बनानी होगी, जो सामान्य वर्षा में भी पानी बचाए और कम वर्षा के दौरान राहत दे सके. इसके लिए प्रदेश में नदी संरक्षण प्राधिकरण का गठन उपयोगी कदम हो सकता है. नदियों का वैज्ञानिक सर्वेक्षण कर उनके बहाव क्षेत्र का सीमांकन किया जाए और उसे राजस्व अभिलेखों में दर्ज किया जाए. नदी क्षेत्रों में अतिक्रमण और अवैध उत्खनन पर सख्ती से रोक लगे. किनारों पर स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल पौधरोपण किया जाए. एक से अधिक जिलों से गुजरने वाली नदियों के संरक्षण के लिए संबंधित जिलों के बीच समन्वित कार्ययोजना भी जरूरी है. जल संकट का स्थायी समाधान केवल सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है. इसमें पंचायतों, नगरीय निकायों, किसानों और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी जरूरी है. दरअसल, जरूरत संकट आने पर जागने की नहीं, बल्कि दूरदर्शी जल प्रबंधन अपनाने की है. जल संरक्षण को प्राथमिकता देकर ही प्रदेश अपनी वर्तमान जरूरतों को पूरा करने के साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए भी पानी सुरक्षित रख सकता है.

विपक्ष की विश्वसनीयता का संकट

भारत में विपक्ष आज गंभीर विश्वसनीयता के संकट से गुजर रहा है. लगातार जिस प्रकार के विषय, विचार और मुद्दे विपक्ष उठा रहा है, वे न तो तर्कसंगत हैं और न ही तथ्यपरक. आम आदमी की बुनियादी सुविधाओं से लेकर आकांक्षी भारत की अपेक्षाओं और देश की नीतिगत चुनौतियों तक, विपक्ष प्रभावी भूमिका में दिखाई नहीं देता. जनता के वास्तविक प्रश्नों पर ठोस विकल्प देने के बजाय वह नैरेटिव की ऐसी आभासी लड़ाई में उलझा है, जिसकी बुनियाद कई बार तथ्यों से अधिक मात्र राजनीतिक आरोपों पर दिखाई देती है. लोकतंत्र में सरकारों की समीक्षा बहुत होती है लेकिन विपक्ष की नहीं. देश ने विपक्ष को संवैधानिक भूमिका सौंप रखी है. विपक्ष अपनी इस जिम्मेदारी से भाग नहीं सकता . संकट तब और गहरा जाता है जब अपनी यह भूमिका निभाना तो दूर बल्कि विपक्ष का नेतृत्व हठधर्मी हो जाए एवं उसपर सापत्नी अहंकार सवार हो. देश को अराजकता पर धकेलने का प्रयास होता है.

स्वतंत्रता के बाद लंबे समय तक कांग्रेस स्वयं या विभिन्न दलों के समर्थन से केंद्र की

भारत को मजबूत विपक्ष चाहिए. ऐसा विपक्ष जो सरकार से कठिन सवाल पूछे, उसकी कमियाँ उजागर करे लेकिन तथ्यों के साथ. ऐसा विपक्ष जो संस्थाओं पर प्रश्न उठाए लेकिन प्रमाण के साथ. ऐसा विपक्ष जो सरकार का विरोध करे तो उसके सामने बेहतर नीति और स्पष्ट विकल्प भी रखे . यह भाजपा ने किया है उन राय्यों में जहाँ विपक्ष में है वहाँ भी यही भूमिका निभा रही है. विपक्ष की असली लड़ाई किसी एक सरकार या किसी एक नेता के विरुद्ध नैरेटिव खड़ा करने की नहीं, अपनी विश्वसनीयता पुनः अर्जित करने होनी चाहिए . जनादेश का सम्मान, अपनी पराजय का आत्ममंथन, आरोपों के स्थान पर प्रमाण, नैरेटिव के स्थान पर नीति और विरोध के स्थान पर विकल्प—यही किसी भी विपक्ष को जनता के बीच फिर से विश्वसनीय बना सकता है. लोकतंत्र में जनता अंतिम निर्णायक है . विपक्ष को तय करना होगा कि वह केवल सरकार का विरोध करना चाहता है या वास्तव में देश के सामने एक विश्वसनीय विकल्प बनना चाहता है.

सत्ता में रही. देश की आर्थिक नीतियों, बजट, प्रशासनिक व्यवस्था और विकास की दिशा तय करने में उसकी निर्णायक भूमिका रही. बीच में गैर-कांग्रेसी सरकारें भी आईं, लेकिन कई दशकों तक राष्ट्रीय राजनीति में कांग्रेस का प्रभुत्व रहा. इसलिए उसके लंबे शासन की उपलब्धियों के साथ उसकी विफलताओं और नीतिगत निर्णयों की जवाबदेही से भी उसे बचाया नहीं जा सकता. समय के साथ भ्रष्टाचार के आरोप, प्रशासनिक अकर्मण्यता, नीतिगत असमंजस और नेतृत्व से जुड़े प्रश्न राजनीतिक विमर्श के केंद्र में आए. जनता के बीच असंतोष बढ़ा और कांग्रेस का राजनीतिक आधार कमजोर होता गया. 2014 में इस असंतोष ने निर्णायक रूप लिया. नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया और केंद्र

में भाजपा नीत सरकार बनी. यह केवल सत्ता परिवर्तन नहीं था, बल्कि लंबे समय से चली आ रही राजनीतिक व्यवस्था के प्रति जनता के बदलते रुझान का स्पष्ट संकेत था. यहीं से विपक्ष के सामने आत्ममंथन का अवसर था. चुनावी पराजय के कारणों को समझना, संगठन और नेतृत्व की कमियों को स्वीकार करना तथा जनता के सामने नई नीतियाँ और नए विकल्प के साथ जाना किसी भी लोकतांत्रिक दल का स्वाभाविक रास्ता होना चाहिए.

चुनाव प्रक्रिया पर प्रश्न उठाना लोकतांत्रिक अधिकार है लेकिन गंभीर आरोपों को प्रमाणित करना भी उतना ही आवश्यक है. निर्वाचन आयोग ने ईवीएम में कथित छेड़छाड़ को प्रदर्शित करने का अवसर राजनीतिक दलों को दिया. इसके

बावजूद आज तक ऐसा कोई प्रमाणित मामला सामने नहीं आया जिसने यह सिद्ध किया हो कि देश के चुनावों में EVM के माध्यम से व्यवस्थित रूप से जनादेश बदला गया. VVPAT और मतगणना की निर्धारित प्रक्रियाएँ चुनावी सत्यापन का हिस्सा हैं.

विपक्ष की समस्या यहीं समाप्त नहीं होती. सरकार की नीतियों से असहमति उसका लोकतांत्रिक अधिकार और दायित्व है लेकिन केवल विरोध किसी राजनीतिक दल को विकल्प नहीं बनाता. आज का भारत आकांक्षी भारत है. जिसे नरेंद्र मोदी ने समझा है और उस ओर अपनी सरकार के तेजी से कदम बढ़ाये हैं. आज नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चुनावी राजनीति और सरकार का विमर्श बदला है. नागरिक बेहतर सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और सुरक्षा के साथ आधुनिक बुनियादी ढाँचा, तकनीक, निवेश के नए अवसर पर चर्चा करता है.

इन प्रश्नों पर विपक्ष की अपनी स्पष्ट नीति और रोडमैप क्या है. यह अधिक महत्वपूर्ण सवाल है. किसी सरकारी योजना को गलत बताने के साथ यह बताना भी जरूरी है कि गलती कहाँ है, उसका समाधान क्या है और सत्ता में आने पर उससे बेहतर क्या किया जाएगा. जनता केवल यह नहीं सुनना चाहती कि सरकार ने क्या गलत किया. वह यह भी जानना चाहती है कि विपक्ष क्या सही करेगा. (लेखक भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश मंत्री व राज्यसभा सांसद है.)

विंधी की डायरी

श्रेय की होड़ और जुबानी जंग

शिविर के दौरान नगरनिगम के सियासी अखाड़े में कुछ ऐसा ही देखने को मिला. राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी, महापौर योगेश ताम्रकार के अलावा जिले के आला प्रशासनिक अमले के सामने सांसद गणेश सिंह ने जो कहा वह किसी से छिपा नहीं है. उपलब्धियों के पैमाने की चर्चा करते हुए उन्होंने जनप्रतिनिधियों को यह भी सबक सिखाया कि लोकतंत्र में सब की जवाबदेही तय होती है. जनता की अदालत में स्वयं के प्रयासों से हासिल की गई उपलब्धि ही आंकी जाती है. शेष कही गई सारी बातें अर्थविहीन होती है. उन्होंने नसीहत का पाठ पढ़ाते हुए यह भी कहा कि अगर कोई एक काम ठीक से नहीं हो पाया तो चार दूसरे अच्छे काम की चर्चाओं पर पूर्णविराम नहीं लगाया जाना चाहिए. लोगों के बीच उन कामों की भी बात कहीं जानी चाहिए.

पूर्व विधायक की सक्रियता के मायने क्या?

सीधी के पुराने सोनांचल बस स्टैंड को बंद

शिलापट्टिका के बहाने पूर्व विधायक ने निकाली भड़ास

भाजपा के अंदर गुटबाजी जो लम्बे समय से पनप रही थी वह अब सार्वजनिक तौर पर मंचों में दिखाई देने लगी है. शिलापट्टिका में नाम न होने और मंच पर उचित स्थान न मिलने के कारण त्यौंथर से भाजपा के पूर्व विधायक श्यामलाल द्विवेदी का गुस्सा फूट पड़ा. अपने ही पार्टी के वर्तमान विधायक सिद्धार्थ तिवारी पर भड़क गये और पार्टी की मर्यादा को तार-तार करते हुए जमकर भड़ास निकाली. दरअसल त्यौंथर तहसील के भवन लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान शिलापट्टिका में नाम न होने के कारण पूर्व विधायक नाराज हो गये और समर्थकों ने नारेबाजी शुरू कर दी. किसी तरह से सांसद जनार्दन मिश्रा ने समझाइश देकर मामला शांत करया. वही विधायक सिद्धार्थ तिवारी चुपचाप लोकार्पण पुजा में बैठे रहे और पूर्व विधायक चिल्लाते हुए अपना कड़ा विरोध जताते रहे. असल में टिकट कटने के बाद से ही पूर्व विधायक खेमेबाजी के साथ अलग-थलग हैं और समय-समय पर मौका मिलते ही किसी न किसी बहाने से अपनी भड़ास निकालते रहते हैं. जिस तरह से लोकार्पण कार्यक्रम में पूर्व विधायक ने पार्टी की किरकिरी की. पूरा मामला प्रदेश नेतृत्व तक पहुंच गया है. मंच के बजाय पार्टी फोर्म में बात रखी जा सकती थी. लेकिन पूर्व विधायक ने सार्वजनिक तौर पर विवाद खड़ा कर पार्टी की मर्यादा को तार-तार करते हुए विपक्षी दलों को हमला करने का मौका दे दिया .

पार्टी की मजबूती का ‘महामहिम’ संकल्प!

अब इस बात को भूल जाना चाहिए कि संवैधानिक पद पर विराजमान व्यक्ति किसी पार्टी का नहीं होता और वह पक्ष-विपक्ष सभी के प्रति तटस्थ व पूरी तरह निष्पक्ष हुआ करता है. वह आदर्श चिंतन कब का दफन हो चुका है वयोंकि ओडिशा के राज्यपाल पद के लिए अपना नाम घोषित होते ही महामहिम ब्रजमोहन राम ने अविचल निष्ठा के साथ संकल्प व्यक्त कर दिया कि मैं ओडिशा जाकर बीजेपी संगठन की मजबूती के लिए काम करूंगा तथा पार्टी को अधिक से अधिक वोट मिलें इसके लिए जी जाऊंगा. इसके कहते हैं सत्य वचन और पार्टी के प्रति पूर्ण समर्पण ! ब्रजमोहन राम ने अपने इरादों को छिपाया नहीं बल्कि सब कुछ साफ-साफ ढंके की चोट पर बता दिया. इसे कहते हैं सत्य वचन और पार्टी के प्रति पूर्ण समर्पण ! ब्रजमोहन राम ने अपने इरादों को छिपाया नहीं बल्कि सब कुछ साफ-साफ ढंके की चोट पर बता दिया. इसे कहते हैं सत्य वचन और पार्टी के प्रति पूर्ण समर्पण !

बोस से छतीस का आकड़ा था. यदि फिल्मों में जेम्स बॉन्ड खुफिया एजेंट है तो राज्यपाल के रूप में भी ब्रजमोहन राम बीजेपी के एजेंट रहेंगे. उन्होंने स्वयं ही अपनी भावी भूमिका और कार्यकलाप के बारे में खुलकर बता दिया. इसलिए हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े-लिखें को फारसी क्या !

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मस्क की नहीं चलेगी मनमानी, हमारे लिए ठीक हैं अंबानी

पड़ोसी ने हमसे कहा, ‘निशानेबाज, एलन मस्क अपनी स्टारलिनक भारत लाना चाहते हैं ताकि सारे भारतीय इंटरनेट से जुड़ सकें. हमारी सरकार को शर्त है कि मस्क को भारत के कानून की चौखट में काम करना होगा जिसके लिए वह तैयार नहीं हैं बल्कि झुंझलाहट में पूछ रहे हैं कि क्या मुकेश अंबानी इंडिया के बॉस हैं?’

हमने कहा, ‘मस्क झुंझलाएं या सिर पटकें, भारतवासियों के लिए अंबानी का जिओ हो सस्ता, सुंदर और टिकाऊ है. हम जिओ और जीने दो के सिद्धांत में विश्वास रखते हैं. अभी हमें मोबाइल डेटा का एक गीगाबाइट लगभग 10 रुपए में उपलब्ध है. फाइबर कनेक्शन 500 से 1500 में मिल जाता है. अधिकांश परिवार अपना इंटरनेट बिल 1,000 रुपए से कम रखने का प्रयास करते हैं. इसकी तुलना में मस्क के स्टारलिनक का कित लगभग 34,000 रुपए का पड़ेगा और महीने भर का खर्च 3,000 से लेकर 8,600 रुपए तक आएगा.’

पड़ोसी ने कहा, ‘निशानेबाज, मस्क का स्टारलिनक

उपग्रह या सैटेलाइट से चलेगा. उसे केवल की जरूरत नहीं होगी. मस्क ने अंतरिक्ष में अपने कदम रखे हैं. उनकी निजी स्पेस टैवल एजेंसी स्पेस एक्स है. यह नासा को टक्कर देते हैं. चांद-सितारों की महत्वाकांक्षा रखनेवाले मस्क को मस्त चाल से भारत क्यों नहीं आने दिया जा रहा?’

हमने कहा, ‘आपने गीत सुना होगा- मैंने चांद और सितारों की तमन्ना की थी, मुझको रातों की सियाही के सिवा

कुछ ना मिला ! दूर के डोल सुहावने होते हैं. मस्क चाहे कितना ही मस्का लगाने की कोशिश करें, भारत सरकार नहीं पिघलेगी. हम नहीं चाहते कि हमारा डेटा विदेशियों के हाथ लग जाए !’ पड़ोसी ने कहा, ‘निशानेबाज, हमारा विचार है कि समय के साथ प्रगति को स्वीकार करना चाहिए. स्टारलिनक से जंगल, पहाड़, दुर्गम क्षेत्र, समुद्र, आपदाग्रस्त इलाके में हर कहीं फास्ट इंटरनेट कनेक्शन मिलेगा. उसे मोबाइल टावर की आवश्यकता नहीं है. हमें दूरस्थ शिक्षा, उद्योग-व्यापार के विकास के लिए स्पीड वाले सुलभ इंटरनेट की आवश्यकता है जो हमें मस्क दे सकते हैं. रही बात महंगा होने की, तो शहरों में लोगों की कमाई बढ़ी है. वह इसे अफोर्ड कर सकते हैं. कहावत है- सस्ता रोये बार-बार, महंगा रोये एक बार ! मस्क का मतलब होता है कस्तूरी. क्या आप केसर-कस्तूरी नहीं चाहते? अंग्रेजी में खरबूजे को मस्क मेलन कहते हैं. अमेरिका में खरबूजा कैटालूप कहलाता है. हमारे लिए मस्क की बजाय अंबानी ही बेहतर हैं. जिओ को अपनाओ और बोलो अम्बे माता की जय !’

शब्द-सागर

12412

- डॉ. सागर खांदेवाला

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

और मेवे जो डलियों में सजाकर किसी बड़े के पास उसके सम्मानार्थ भेजे जाए

ऊपर से नीचे

1. जूते आदि बनाने वाला कारीगर 3. शिथिल, धका हुआ 4. प्रहार 5. कुचले जाने का शब्द 7. चिपकाना, चपकना 9. जमीन पर लुढ़कने वाला कबूतर 12. खोज, टटोल, खबर 13. वह नल जिसके द्वारा पानी या हवा एक ओर से दूसरी ओर पहुंचाई जाती है (अंग्रेजी) 14. कथन, कहना, आज्ञा, उपदेश 16. साल, बारह मास का समय 17. प्रसन्नता, आनंद, उमंग (सं.) 18. काल, वक्त, अवसर 21. चमेली के समान सुगंध वाला एक पौधा, समय 23. मरा हुआ, मृत 24. गुलाम, सेवक, नौकर 25. मोटी और चरपरी जड़ वाला एक पौधा

Solution 12411

शु

क

स

ह

का

रि

ता

तु

म

म

ना

र

र

प्र

सा

द

सो

ना

मु

प्र

ता

ज

म

ह

ल

मं

ड

ना

म

अ

ना

धा

ल

य

स

क

पा

ण

ल

की

ख

ति

र

छा

ना

न

रू

रा

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. यात्रा होगी, धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी. वर्ष के मध्य में मित्रों एवं भाईयों का सहयोग रहेगा. अर्चन संपत्ति में सफलता मिलेगी. दाम्पत्य जीवन में मधुरता आएगी, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. कर्मचारियों का सहयोग रहेगा. वर्ष के अन्त में पारिवारिक समस्या से चिन्ता होगी. यात्रा आदि का योग है. शारीरिक कष्ट होगा. मित्र के प्रति उदासीनता रहेगी. अधिकारियों से मतभेद रह सकता है. मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को

मेघ- आप जिसे घाटे का सौदा समझ रहे थे, उसमें अच्छा लाभ मिलेगा. उच्च अध्ययन पर विचार होगा, परिश्रम अधिक होगा. मान सम्मान और प्रशिक्षण की प्राप्ति होगी.

वृषभ- कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता मिलेगी, पुराना कार्य करने से प्रसन्नता होगी, यश मिलेगा. विवाद को टालना हितकर होगा.

मिथुन- भावनाओं पर काबू रखें, लोग मजक उड़ायेगे, पारिवारिक मामलों में सबको सलाह मिलेगा. विवाद को टालना हितकर होगा.

वृश्चिक- आप जिसके सोच से मामले सुलझेगे, मित्रों का सहयोग रहेगा, भावुकता पर नियंत्रण रखें, नवीन योजनाओं का विस्तार हो सकेगा.

सिंह- निजी कार्यों को टालने से समस्या बढ़सकती है, निजी संबंधों में चल रहा ठगवोर दर होगा, कुछ जरूरी काम बनेंगे, लाभ प्राप्त होगा.

कन्या- आशा से अधिक खर्च होगा, नियमितता का ध्यान रखें, किसी से व्यर्थ का वाद विवाद न करें, श्रम अधिक होगा. नवीन योजना बनेंगी.

तुला- राजकीय क्षेत्र में पद प्रतिष्ठ बढ़ेगी, मांगलिक कार्यों में खर्च होगा, नवीन योजनाओं की शुक्लआत होगी, सुख सुविधाएं रहेंगी.

परिश्रम- अधिक कर होगा, वृश्चिक- नौकरी संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी, समय के स्वरूप को देखकर कार्य करें, पुरुषार्थ बना रहेगा, कामकाज बनने का योग है.

धनु- प्रयास करने पर सफलता मिलेगी, राजकीय कार्य बनेंगे, दूर दराज को यात्रा संभाव्य है, धार्मिक आयोजन होगा. अनावश्यक व्यय को टालें.

मकर- नए मित्र बनेंगे, स्त्री जाति की सलाह उपयोगी रहेगी, मानसिक स्थिरता रहेगी, जमीन जायजाद प्राप्ती में सफलता मिलेगी.

कुम्भ- परिश्रम के अनुरूप सफलता मिलने से खुशी होगी, रचनात्मक कार्यों में रूचि बढ़ेगी, पारिवारिक जीवन आशामय तरकी वाला होगा.

मीन- प्रभावशाली लोगों के संपर्क का लाभ मिलेगा, व्यापार बढ़ेगा, कार्य में व्यस्तता रहेगी, जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा.

SUDOKU

7544

4

9

2

8

4

8

3

9

4

7

2

5

6

2

5

9

1

2

8

4

3

6

7

6

4

2

3

5

7

9

1

8

8

3

7

9

6

1

4

2

5

4

7

5

8

2

6

1

9

3

3

6

9

7

1

5

8

4

2

1

2

8

4

3

9

7

5

6

7

5

6

1

9

8

2

3

4

9

8

3

5

4

2

6

7

1

2

1

4

6

7

3

5

8

9

नवभारत सं-दूक 7543

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहली का केवल एक ही हल है.